• गुरुवार...

भगवान विष्णु

सनातन धर्म में हर दिन किसी न किसी देवी-देवता को समर्पित किया गया है। साथ ही हर दिन किसी न किसी ग्रह की पूजा की जाती है। गुरुवार का दिन जगत के पालनहार भगवान विष्णु को समर्पित किया किया गया है। इस दिन विधि-विधान से भगवान विष्णु की पूजा की जाती है और व्रत रखा जाता है. इस दिन पूजन और व्रत करने से भगवान विष्णु बहुत प्रसन्न होते हैं।

मान्यता है कि इस दिन पूजन और व्रत के प्रभाव से जीवन में खुशहाली आती है. धन धान्य की कमी नहीं होती। गुरुवार को ग्रहों में देवताओं के गुरु बृहस्पति की पूजा की जाती है। ये दिन बृहस्पति देव का भी है। इस दिन बृहस्पति देव की पूजा के साथ-साथ कुछ विशेष उपाय किए जाते हैं। इन उपायों को करने से बड़ा लाभ मिलता है। इस दिन चने की दाल का दान करने के लिए कहा जाता

है. ऐसे में आइए जानते हैं कि गुरुवार को चने की दाल क्यों दान देनी चाहिए?

- माना जाता है इस दिन चने की दाल का दान करने से सभी कष्ट और समस्याएं दूर हो जाती हैं। नारायण भगवान को भी चने की दाल अर्पित की जाती है। इस दिन किसी जरूरतमंद को चने की दाल अवश्य देनी चाहिए। अगर ऐसा हर गुरुवार या बृहस्पतिवार को किया जाता है, तो भगवान विष्णु और गुरुदेव बृहस्पति की कृपा दृष्टि बनी रहती है।
- मान्यता है कि गुरुवार के दिन चने की दाल का दान करने से जीवन से आर्थिक तंगी दूर होती है। धन आगमन के रास्ते खुलते हैं। घर में बरकत बनी रहती है। आर्थिक तंगी से प्रभावित लोगों को ये उपाय अवश्य करना चाहिए। यानी गुरुवार के दिन चने की दाल का दान करना चाहिए। इतना ही नहीं अगर घर में बरकत नहीं हो रही है, तो भी इस उपाय को किया जा सकता है। क्योंकि ऐसा करने से घर में बहुत अधिक बरकत होना शुरू हो जाती है।

• नवरात्र में...

ना करें ये काम

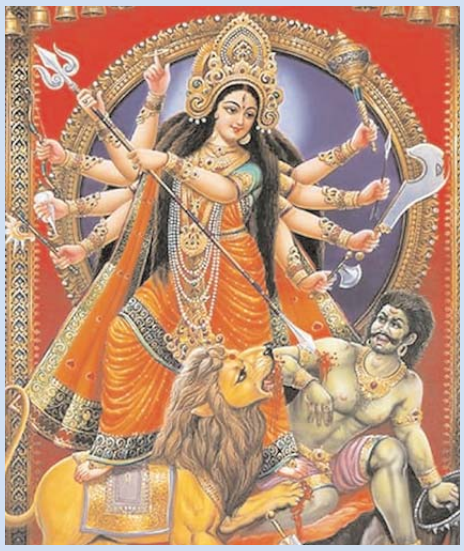

चैत्र नवरात्र का पावन पर्व आध्यात्मिक ऊर्जा और शक्ति की उपासना का समय है। पंचांग के अनुसार, इस साल चैत्र नवरात्रि का शुभारंभ 19 मार्च 2026 से हो रहा है। इन दिनों में मां दुर्गा के नौ अलग-अलग स्वरूपों की पूजा-अर्चना की जाती है. मान्यता है कि नवरात्रि के दौरान साक्षात मां दुर्गा का वास घर-घर में होता है। ऐसे में घर की पवित्रता बनाए रखना बहुत ही जरूरी होता है। शास्त्रों के अनुसार, इन 9 दिनों में कुछ कामों और वस्तुओं से परहेज करना चाहिए, वर्ना मां दुर्गा की कृपा से आप वंचित रह सकते हैं और घर में नकारात्मकता का प्रवेश हो सकता है।

- नवरात्र के दौरान चमड़े से बनी चीजें जैसे बेल्ट, पर्स, जैकेट या जूते आदि का इस्तेमाल करने से बचना चाहिए। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यह अशुद्ध माना जाता है और इससे पूजा की पवित्रता प्रभावित हो सकती है।
- नवरात्र के नौ दिनों में बाल कटवाना या नाखून काटना भी वर्जित माना गया है। ऐसा माना जाता है कि इस समय शरीर से जुड़ी ऐसी क्रियाएं करने से पूजा का फल कम हो जाता है।
- इन पवित्र दिनों में मांस, मछली, अंडा, लहसुन और प्याज जैसे तामसिक भोजन से दूरी बनाकर रखनी चाहिए. इसकी जगह सात्विक भोजन और फलाहार करना शुभ माना जाता है।
- नवरात्र में साफ-सुथरे और पवित्र वस्त्र पहनना चाहिए। गंदे कपड़े पहनकर पूजा करना देवी की आराधना में बाधा माना जाता है।
- यदि आपने घर में कलश स्थापना की है तो नवरात्रि के दौरान नींबू काटने से बचना चाहिए। मान्यता है कि इससे पूजा की शुद्धता प्रभावित होती है।
- नवरात्र के दौरान शराब, सिगरेट या किसी भी प्रकार के नशे की वस्तु घर में लाना या छूना भी अशुभ माना जाता है। इसे देवी दुर्गा का अपमान माना जाता है और इससे घर में नकारात्मक ऊर्जा बढ़ सकती है।
- नवरात्र के दौरान रोज सुबह-शाम मां दुर्गा की पूजा करें, घर को साफ रखें और सात्विक जीवनशैली अपनाएं।

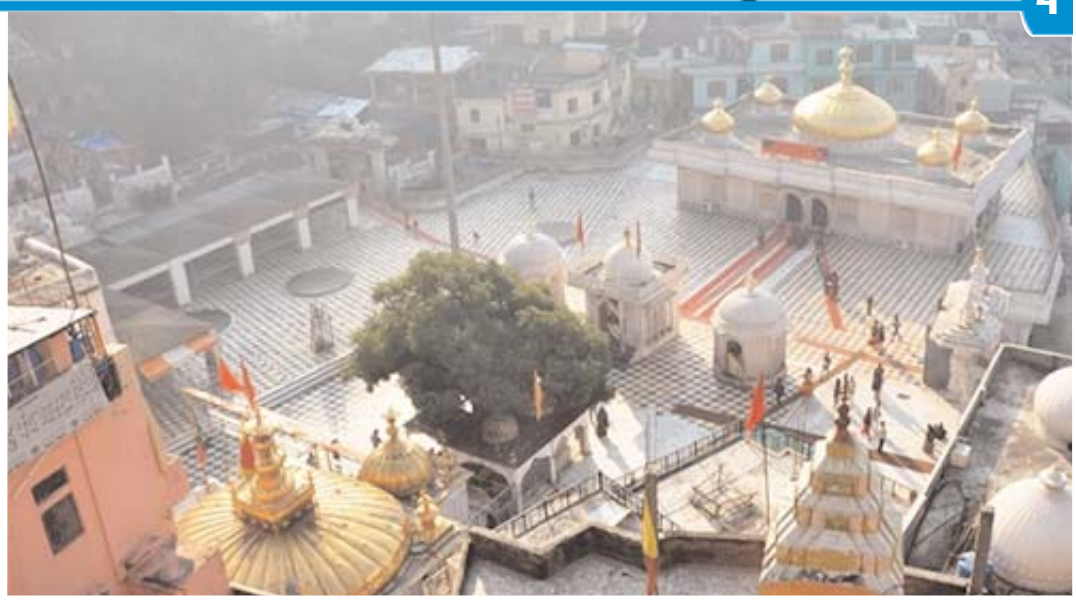

ये हैं मां दुर्गा के प्रसिद्ध मंदिर

देवी दुर्गा के मंदिर शक्ति और भक्ति के ऐसे केंद्र हैं, जहां हर नवरात्रि में लाखों श्रद्धालु आशीर्वाद प्राप्त करने आते हैं। कुछ मंदिर पहाड़ियों की ऊंचाइयों पर स्थित हैं, तो कुछ सदियों पुरानी गुफाओं में, लेकिन हर मंदिर की अपनी विशेष महिमा है।

इस नवरात्रि, अगर आप देवी दुर्गा के अनोखे मंदिरों के दर्शन की योजना बना रहे हैं, तो ये 8 पवित्र स्थल आपके लिए आदर्श रहेंगे...

भारत आस्था, परंपरा और दिव्यता की भूमि है। यहां के हर मंदिर की अपनी अनूठी कहानी है, जो भक्तों को न सिर्फ धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक अनुभव भी प्रदान करती है। देवी दुर्गा के मंदिर शक्ति और भक्ति के ऐसे केंद्र हैं, जहां हर नवरात्रि में लाखों श्रद्धालु आशीर्वाद प्राप्त करने आते हैं। कुछ मंदिर पहाड़ियों की ऊंचाइयों पर स्थित हैं, तो कुछ सदियों पुरानी गुफाओं में, लेकिन हर मंदिर की अपनी विशेष महिमा है। इस नवरात्रि, अगर आप देवी दुर्गा के अनोखे मंदिरों के दर्शन की योजना बना रहे हैं, तो ये 8 पवित्र स्थल आपके लिए आदर्श रहेंगे।

- वैष्णो देवी मंदिर, जम्मू-कश्मीर -उत्तर भारत का सबसे प्रसिद्ध तीर्थ स्थल, माता वैष्णो देवी का मंदिर, त्रिकुटा पर्वत की गुफा में स्थित है। यहां तक पहुंचने के लिए लगभग 12 किलोमीटर की यात्रा करनी होती है, जिसे पैदल, टट्टू या हेलिकॉप्टर से तय किया जा सकता है। गुफा के भीतर माता के तीन पिंडी रूपों के दर्शन होते हैं, जो श्रद्धालुओं के लिए बहुत पवित्र माने जाते हैं। यहां का वातावरण 'जय माता दी' के नारों और भक्ति से गूंजता रहता है।

- कामाख्या मंदिर, असम-गुवाहाटी में स्थित यह शक्तिपीठ देवी दुर्गा के एक विशेष रूप, माता कामाख्या को समर्पित है। यह मंदिर स्त्री ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है और यहां का वार्षिक अम्बुबाची मेला विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इस मंदिर की वास्तुकला और इसकी आध्यात्मिक महिमा इसे दुर्गा उपासकों के लिए एक प्रमुख केंद्र बनाती है।
- ज्वाला देवी मंदिर, हिमाचल-कांगड़ा जिले में स्थित इस मंदिर में देवी की मूर्ति नहीं, बल्कि यहां एक चमत्कारी अग्नि प्रज्वलित रहती है, जिसे दिव्य ज्वाला माना जाता है। यह भारत के सबसे रहस्यमय मंदिरों में से एक है, जहां प्राचीन काल से अग्नि ज्योतियां प्रज्वलित रहती हैं। इसे देवी का प्रत्यक्ष स्वरूप माना जाता है और भक्त यहां अपनी मनोकामनाएं लेकर आते हैं।
- चामुंडेश्वरी मंदिर, कर्नाटक-मैसूर की चामुंडी पहाड़ियों पर स्थित यह मंदिर देवी चामुंडेश्वरी को समर्पित है, जो दुर्गा का ही एक उग्र रूप हैं। यहां तक पहुंचने के लिए 1,000 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं, लेकिन जब भक्त मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करते हैं, तो उन्हें एक अद्भुत आध्यात्मिक शांति का अनुभव होता है। दशहरा के समय यहां विशेष रूप से भव्य आयोजन होते हैं।
- कालीघाट मंदिर, पश्चिम बंगाल कोलकाता में स्थित यह मंदिर मां काली को समर्पित है, जिन्हें देवी दुर्गा का ही एक रूप माना जाता है। यह भारत के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक है, जहां मां सती के शरीर का एक हिस्सा गिरा था। मंदिर का वातावरण हमेशा भक्तों की आस्था और भक्ति से भरा रहता है। नवरात्रि के दौरान यहां का माहौल अत्यंत दिव्य और उल्लासपूर्ण होता है।
- महालक्ष्मी मंदिर, महाराष्ट्र -कोल्हापुर में स्थित यह मंदिर देवी महालक्ष्मी को समर्पित है, जिन्हें दुर्गा का ही एक रूप माना जाता है। यह मंदिर वास्तुकला और धार्मिक महत्व के कारण बहुत प्रसिद्ध है. यहां यह विश्वास है कि जो भी सच्चे मन से प्रार्थना करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।
- करणी माता मंदिर, राजस्थान-बीकानेर में स्थित इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां हजारों चूहों को पवित्र माना जाता है। इन्हें 'काबा' कहा जाता है और यह माना जाता है कि ये देवी के भक्तों का पुनर्जन्म हैं। यदि कोई भक्त यहां सफेद चूहे के दर्शन कर ले, तो उसे अत्यंत शुभ माना जाता है। यह भारत के सबसे अनोखे मंदिरों में से एक है।
- दक्षिणेश्वर काली मंदिर, पश्चिम बंगाल -हुगली नदी के तट पर स्थित यह मंदिर देवी काली को समर्पित है। इसे 19वीं शताब्दी में रानी रश्मोनी ने बनवाया था और यह महान संत रामकृष्ण परमहंस से भी जुड़ा हुआ है. इस मंदिर की भव्यता, नदी के किनारे की सुंदरता और आध्यात्मिकता इसे नवरात्रि के दौरान विशेष रूप से दर्शनीय बनाती है।

■ पं. नित्यानंद

• पूजा-पाठ...

संतोषी माता

हिन्दू धर्म में सप्ताह का हर दिन किसी न किसी देवी-देवता को समर्पित होता है। इसी तरह शुक्रवार के दिन संतोषी माता की पूजा करने का विधान है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार जो भी व्यक्ति विधि विधान और श्रद्धा भाव से मां संतोषी की पूजा करता है, उसके जीवन के दुख-कष्ट दूर होते हैं और सुख-समृद्धि का वास होता है। साथ ही, शुक्रवार के दिन मां संतोषी को गुड़ और चने का भोग लगाना शुभ होता है। कहा जाता है कि ऐसा करने से संतोषी माता शीघ्र प्रसन्न होती हैं।

शुक्रवार के दिन पूजा के दौरान संतोषी माता की चालीसा पाठ करना बेहद फलदायी माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार संतोषी माता चालीसा का पाठ करने से व्यक्ति को सुख, शांति, और संतोष की प्राप्ति होती है। इसके अलावा संतोषी माता भक्त की मनोकामनाएं पूरी करती हैं और जीवन से सभी तरह की नेगेटिविटी दूर करती हैं।

• वास्तु शास्त्र...

वास्तु शास्त्र के अनुसार घर के भीतर भारी फर्नीचर को हमेशा दक्षिण, पश्चिम या फिर आग्नेय दिशा यानि दक्षिण-पश्चिम दिशा में रखना चाहिए। वास्तु के अनुसार ये दिशाएं भारी फर्नीचर के लिए पूरी तरह से अनुकूल रहती हैं। घर में हल्के फर्नीचर रखने हों तो उसे आप घर के उत्तर, पूर्व या फिर उत्तर दिशा में रख सकते हैं। अगर आपको अपने घर में बच्चे के लिए स्टडी टेबल लगाना हो तो उसे घर के ईशान कोण यानि उत्तर-पूर्व दिशा में लगाना बेहतर रहता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित